B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)
आधुनिक काल
भाग-1

प्रश्न :- भारतेन्दु-कालीन हिन्दी-कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए हिन्दी-काव्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का स्थान निर्धारित करें?

उत्तर :- भारतेन्दु युग साहित्यिक पुनरुत्थान का युग है। गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में इस युग की देन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस युग में हिन्दी गद्य और उसकी विभिन्न विधाओं - नाटक, कहानी, निबन्ध और आलोचना - का जैसा विकास हुआ वैसा पहले नहीं हो सका था। भारतेन्दु युग के साथ आधुनिक गद्य-युग का प्रारम्भ एक महत्वपूर्ण घटना है। इस दृष्टि से हम इस युग को गद्य-विकास का युग कह सकते हैं, परन्तु कविता के क्षेत्र में भी कविता के एक नए उत्थान और मोड़ की दृष्टि से इस युग का अपना महत्व है। भारतेन्दु युग के साथ हिन्दी कविता में आधुनिक युग का प्रारम्भ होता है। इससे पूर्व हिन्दी में रीतिकालीन शृंगारिक कविता की प्रधानता थी, जिसमें प्रमुख रूप से नारी के रूप-वर्णन (अथवा नखशिख वर्णन) और वासना-प्रधान शृंगारिक चित्र ही रहते थे। भारतेन्दु युग के कवियों ने समाज-सुधार, देशभक्ति और भारतीय संस्कृति के गौरव का गान अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। इससे पूर्व कविता राजाओं एवं सामन्तों के लिए लिखी जाती थी, जनता के साथ उसका सम्बन्ध बहुत कम था। भारतेन्दु युग में कवि जनता से सम्पर्क स्थापित करता है और उसकी कविता का सम्बन्ध जन-जीवन से जुड़ जाता है। निम्न पंक्तियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं उनके समकालीन काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय दिया गया है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (सं० 1907-1941) - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक युग के प्रवर्तक हैं। इनका जन्म काशी के एक सम्पन्न वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिता गोपालचन्द्र (उपनाम गिरधरदास) भक्त और कवि थे। हरिश्चन्द्र को घर पर ही विभिन्न भाषाओं की शिक्षा प्राप्त हुई। ग्यारह वर्ष की आयु में ही इन्होंने कविता लिखना

आरम्भ किया। जगन्नाथ की यात्रा में उन्होंने बंगाल साहित्य की प्रवृत्तियों से परिचय प्राप्त किया। वहाँ से लौटकर वे निरन्तर साहित्य-साधना में निरत रहे। उनकी समस्त रचनाओं की संख्या 175 के लगभग है।

साहित्य के क्षेत्र में तो भारतेन्दु ने ख्याति अर्जित की ही है, समाज में भी वे अत्यन्त लोकप्रिय रहे हैं। वे कवि, नाटककार और सम्पादक होने के साथ ही एक सच्चे राष्ट्रीय नेता और समाज-सुधारक भी थे। उनका 'भारतेन्दु' विशेषण उनकी लोकप्रियता का सूचक है। स्वभाव से भारतेन्दु अत्यन्त उदार, सरल और विनोदी थे। उनका जीवन शिक्षा और साहित्य के लिए था।

भारतेन्दु के काव्य-ग्रन्थों की संख्या 70 है, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने इनका संकलन 'भारतेन्दु ग्रन्थावली' (खण्ड दो) में किया है, इसमें से कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम हैं- भक्त-सर्वस्व, प्रेम-सरोवर, प्रेम-माधुरी, प्रेम-तरंग, सतसई-श्रृंगार, होली, वर्षा-विनोद, विनय-वल्लरी, मधु मुकुल, उत्तरार्ध भक्तमाल, प्रेम-फुलवारी, दानलीला आदि। इन ग्रन्थों से भारतेन्दु के काव्य-विषय की व्यापकता का परिचय मिलता है।

(शेष बचा है)

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 14.02.2023
मो० न० - 7909046087